मैनिट भोपाल समाचार कतरन

MANIT Bhopal News Clippings

An Initiative By

Central Library

Maulana Azad National Institute of Technology Bhopal

Link Road No 3, Near Kali Mata Mandir

Bhopal, Madhya Pradesh – 462003

दैनिक भास्कर

Page No.02

रामायण काल मैनिट में रामायण में सस्टेनेबल इन्फ्रास्ट्रक्चर-स्मार्ट सिटी प्लानिंग पर व्याख्यान

भरत ने जिस सड़क को बनवाया उसमें कंक्रीट जैसे मटेरियल का उल्लेख, पेड़ों को काटा पर वहां दोगुने पौधे भी लगाए

सिटीरिपोर्टर | भोपाल

रामायण काल की सिविल इंजीनियरिंग, प्राचीन तकनीकी कौशल का अद्वितीय उदाहरण

रामायण काल को धार्मिक दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि उस समय की सिविल इंजीनियरिंग अत्यधिक उन्नत थी। यह विचार मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (मैनिट) के सिविल इंजीनियरिंग विभाग में आयोजित व्याख्यान में डॉ. मनीष दुबे ने व्यक्त किए। वे रामायण में सस्टेनेबल इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलेपमेंट और स्मार्ट सिटी प्लानिंग विषय पर बोल रहे थे। डॉ. दुबे ने रामायण में वर्णित संरचनाओं को उस समय की तकनीकी प्रगति का प्रमाण बताया।

दुबे ने श्रीभरत की चित्रकूट यात्रा का उदाहरण दिया, जिसमें सड़क, पुल, सुरंग और पर्यावरणीय चिंताओं का उल्लेख मिलता है।

अयोध्याकांड के 80वें सर्ग में श्रीभरत ने चित्रकूट यात्रा से पहले सड़क निर्माण का आदेश दिया था। संस्कृत विद्वानों ने श्लोक में प्रयुक्त शब्द 'ससुधाकुट्टीमतलः' को 'कंक्रीट' बताया है, जो आधुनिक सीमेंट कंक्रीट निर्माण से मेल खाता है। रामायण के तकनीकी विश्लेषण से भवन निर्माण, जल संसाधन, ग्रीन बिल्डिंग, सॉइल स्टेबिलाइजेशन, फाइबर रीइन्फोर्समेंट और लैंडस्केपिंग जैसे आधुनिक विषयों की झलक मिलती है। डॉ. दुबे ने बताया कि सड़क निर्माण के दौरान पेड़ काटने का उल्लेख भी रामायण में है, लेकिन अगले श्लोक में दोगुने वृक्ष लगाने की बात कही गई है। यह पर्यावरणीय संतुलन की समझ को दर्शाता है। इससे पर्यावरण संतुलन बनाने प्रेरणा ली जा सकती है।

रामसेतु का निर्माण नल-नील द्वारा किया गया था, जो उस समय की उन्नत सिविल इंजीनियरिंग का अद्वितीय उदाहरण है। यह पुल आज भी रहस्य बना हुआ है और उस युग के इंजीनियरिंग कौशल को दर्शाता है। रामायण काल की सिविल इंजीनियरिंग तकनीकें विज्ञान और कला के अद्भुत संगम को दर्शाती हैं। संयोजन में सिविल इंजीनियरिंग विभागाध्यक्ष डॉ. मुकुल कुलश्रेष्ठ, प्रोफेसर रुचि खरे, प्रोफेसर एच. एल. तिवारी और प्रोफेसर कमल सिंह शामिल रहे। इस मौके पर विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर नितिन डिंडोरकर, एस. के. दुबे, पी के जैन सहित कई प्राध्यापक मौजूद रहे।